

ॐ नमो श्री गुरुभ्यो नमः
ग्यानदाकीर्ति

II-67

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

सीहमु
बीजा
नदाकी
नी

ओं नमो श्री सीह मु
वज्र पंजे रे वी स्व पत्न
तं कुतां गा र मध्य सा
सो छः सु र्य ग्गान दा
मुत पतु वध मु परी

रिखे ग्गान दा की नी पेः
वी स्व वज्र ना श्री र्थी
स्व छतुः सीह र्थ वी
किनी नीलाः अस्यां
वज्रांक स्फ रत्न पंच

बुध मन्दीतं मुलतः मुल मुखं कृन्धं अडे हासः सव्य सुकृतं मुधार्म
रत्न सृगार प्रती मुखं श्री नेत्रा दधीन भुजत्रय उर्ध्वित रत्न द्वां ग पर्न
वज्रं च वामत्रयं चारत्न पुरा फ पाल रत्न द्वां गा अस्या पुर्य स्या दी सी
वज्र दा की नी सुकृत सृगार रसा उत्तर स्या दी सी घोल दा की नी सु
वर्षा वर्षाः पञ्चो माया वे ताली नीलाः दधीन स्या दी सी चन्दाली

सींह
मुखी

रक्ता घता पीत तस सीह स्थ बी स्या वधेः सु र्ग रथा कुधि कृत श्व द्वां गः
कपाल रक्त पुरा कपालः अर्चित सर्वे त रक्त दो पाः ये सान्ना सीहीनी २
सीह मुखी सीत पीत वाम सखाः धर्म मर्धा धं सरी रा सोत दं ती न्दे उ
ल्ल प्या व्या घ्री व्या घ्र वक्त्राः निल सीत वाम द धी ना दे हाः सफ राय श सो
मे भूः त्पां जं बु की जं बु क मुखीः रक्त क र्त स मे मा धा धं दे हा ही रवीः

वायु फां डलु की डलु फ वक्त्रा पीत रक्त वाम सखा जा वृद्र नी द्र
प्रछे खुप ता सो त साव जां कु स त र्ज नी व ज पा सः भु पी त स व्वा वाम
भुज भुजा बीज सु र्ग रथाः त त पु र्व दौ र श मे द्री सी ता ह स्त दो पां जली
मुष प्र छी पं ती उ ते र दी पी नी पी ताः मु र्ध्वा स पु ता ज नी दी मी व धा री
पं तीः य म्प चुरवी नी रक्त पुरा मं जली धि क त्प मु ष स नि य सं

सो ह भु
रणी

रुचि धीर धरां युवतीः दधीने वीजी कस्तन वजां जले ३ रुक्तांग
दोषघन स्मर संघो देतर्जनि दोष सुन्या भज रुचानेः स्थित घाः
स्व भज व सुद स घंतीः पता स्वत श्रीवी स्थाष्ट रुचः प्रेत ह दी स घ्य
रुचाः सतो प र्य की न्या अ हत भुज ज ज वी रा जी ताः कल्यांत लेः
न ज्वाल भीरी वल हसी रा सी ज्वाला भिः भीष गा प ज व्या कु म म

३

सो भा सा स्व त र ले गा मी ता हा मो घ सी धीः अ सो ने गा सो त र ना गा शी
ता भा मो घ सी धी भी मु फ्री ताः हुं हुं हुं हुं हुं हुं ओं ईं उं ऊं यै रै ओं नं र्नी
ठर शी जानीः ओं हों ह्या हाः न्त्रि ज्ञान दा की नी ह द य मंत्रः ओं वे ता ली
हुं न्त्रि वे ता ली मंत्रः ओं वै सिं ह दा की नी य हुं फर स्वा हाः ओं आ का
स म र च स्वा कर स म र पा फत् ॥ ॥ न्त्रि सी ह मु षी दा की नी पान

सहितम् दाक्षिणीनामधारणीपरीसनावा ॥ सुत्रसंयद १०४६ मीती

II
67

धमरत्न बज्राचाय सुरत श्री महाबहा